>

Title: Regarding shortage of drinking water in the country.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): सभापति महोदय, आपने मुझे देश में जल संकट की भयावह समस्या के बारे में आज शून्यकाल में यह मुद्दा उठाने की इजाजत प्रदान की, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद करता हूं। हम सब जानते हैं कि जल ही जीवन है, बिना जल जीवन संभव नहीं है। इस संबंध में कविवर रहीम दास की निम्न पंक्तियां बहुत सटीक हैं - "रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी बिना न जी सकें मोती, मानुष, चून।" आज हमारे सामने जल संकट एक गम्भीर रूप लेकर सामने आ रहा है। जलवायु परिवर्तन के साथ समस्या लगातार विकट होती जा रही है। देश में बड़े बांधों व नहरों का इतने बड़े स्तर पर निर्माण तो किया गया है, लेकिन इन परियोजनाओं पर एक बहुत बड़ी धनराशि खर्च करने के बाद भी जल संकट का समाधान नहीं हो पाया है। क्योंकि बड़े बांधों से नदियों को जो स्थाई क्षति होती है, उसकी भरपाई करना बहुत कठिन है। दूसरे शब्दों में एक समस्या के संदिग्ध समाधान के लिए बहुत सी नई समस्याओं को उत्पन्न करने जैसा मामला नजर आता है। ऐसी योजनाओं की जरूरत है, जिसमें नदियों की सामाजिक पर्यावरणीय भूमिका को निभाने के लिए तथा आसपास के क्षेत्रों के रिचार्ज के लिए जितना जल जरूरी है, कम से कम उतना जल नदियों में बहना चाहिए तथा इसके साथ ही पहले से बने तालाबों व अन्य परम्परागत जल स्रोतों की रक्षा व जीर्णोद्धार करना जरूरी है। साथ ही अच्छी गुणवत्ता के जल संरक्षण कार्य भी बड़े स्तर पर होने चाहिए। नदियों, झीलों व अन्य सभी जल स्रोतों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाना चाहिए।

कृषि को सिचाई के लिए उद्योगों से अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही सिंचाई के पानी की बर्बादी न हो उसे भी देखना चाहिए। ये आज जल संकट से निपटने के सस्ते एवं टिकाऊ तरीके साबित हो सकते हैं। सरकार से मेरा सुझाव है कि बहुत महंगी विशालकाय परियोजनाओं से धन बचाकर इसी बजट में गांव-गांव में हरियाली बढ़ाने, छोटे-छोटे तालाब व छोटे-छोटे चैक डैम, बोरीबंध बनाने तथा परम्परागत जल स्रोतों का जीर्णोद्धार किया जाए तो इससे जल संकट दूर करने में सहायता मिलेगी और गांव-गांव मे रोजगार सृजन भी होगा।